IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 6, November - December 2025

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.028

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

| Volume 12, Issue 6, November – December 2025 |

राजस्थान के विद्यालयों में “नो बैग डे” कार्यक्रम का बच्चों के व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण में योगदान

पवन कुमार[1] **डॉ.राजपाल सिंह यादव[2]**

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनू) राजस्थान[1]

सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनू) राजस्थान[2]

सारांश

आज हम 21 वीं शताब्दी के द्वितीय दशक में पहुंच चुके हैं। भौतिक,सामाजिक एवं आध्यात्मिक जगत में तीव्र गति से प्रगति हो रही है। विश्व पटेल पर भारत एक बौद्धिक शक्ति के रूप में उभर कर आने लगा है। भारत अपने लक्ष्यों की ओर तीव्र गति से अग्रसर है। देश सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों (एमडीजी) को आधार लेकर अपनी नीतियां तैयार करके अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर है। इस विकास के दौर में भी देश के सामने अनेक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक समस्याएं हैं। इन सब के बीच ऐसा नहीं है, कि विकास लक्ष्य पीछे छूट जाएंगे। विद्यालय शिक्षा व्यवस्था इसका आधार है। बच्चों के व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण में विभिन्न घटक अपना अपना योगदान अदा करते हैं। लेकिन सबसे अधिक योगदान विद्यालय शिक्षा व्यवस्था के साथ जो ज्ञान अर्जन हो जाता है, वह अधिक प्रभावित रहता है। इसी भाव पर शिक्षाविदों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बच्चों को परिवेश से अधिक जोड़ने पर जोर दिया जिसके तहत ““नो बैग डे”” की शुभारंभ हुई। इससे बच्चों पर सार्थक सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इसका बच्चों के व्यक्तित्व विकास व चरित्र निर्माण पर कारगर प्रभाव पड़ रहा है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य राजस्थान के विद्यालयों में लागू ““नो बैग डे”” कार्यक्रम का बच्चों के व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि किस प्रकार यह कार्यक्रम पारंपरिक कक्षा-केंद्रित शिक्षा के साथ संतुलन स्थापित करते हुए बच्चों के समग्र विकास में योगदान देता है तथा भविष्य की शिक्षा नीति एवं विद्यालयी नवाचारों के लिए किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

मूल शब्द- “नो बैग डे”, पारंपरिक शिक्षा प्रणाली, व्यक्तित्व विकास, चरित्र निर्माण, कौशल विकास

प्रस्तावना

शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न होकर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। आधुनिक शैक्षिक दृष्टिकोण में यह माना जाता है कि विद्यालय का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पूर्ण करना नहीं, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व विकास, नैतिक मूल्यों, सामाजिक व्यवहार तथा जीवनोपयोगी कौशलों का विकास करना भी है। इसी संदर्भ में हाल के वर्षों में विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में अनेक नवाचारी कार्यक्रमों की शुरुआत की गई है, जिनका उद्देश्य बच्चों पर शैक्षणिक दबाव को कम करते हुए सीखने की प्रक्रिया को अधिक रुचिकर, व्यवहारिक एवं जीवन से जोड़ना है। "“नो बैग डे”" कार्यक्रम इसी दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल के रूप में उभरकर सामने आया है। राजस्थान राज्य में विद्यालयी शिक्षा विभाग द्वारा लागू किया गया "“नो बैग डे”" कार्यक्रम बच्चों को एक दिन पुस्तकों और भारी बस्तों से मुक्त रखकर वैकल्पिक शिक्षण गतिविधियों से जोड़ने का प्रयास करता है। इस दिन बच्चों को कला, खेल, योग, नैतिक शिक्षा, समूह गतिविधियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, जीवन कौशल प्रशिक्षण, स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण एवं सामुदायिक सहभागिता जैसी गतिविधियों में सम्मिलित किया जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य बच्चों में रचनात्मकता, आत्मविश्वास, सहयोग की भावना, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करना है, जो उनके व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक माने जाते हैं।

वर्तमान समय में विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में बच्चों पर बढ़ते शैक्षणिक दबाव, मानसिक तनाव, प्रतिस्पर्धा तथा पुस्तकीय ज्ञान पर अत्यधिक निर्भरता को लेकर गंभीर चिंताएँ व्यक्त की जा रही हैं। राजस्थान जैसे भौगोलिक एवं सामाजिक विविधताओं वाले राज्य में यह समस्या और भी जटिल रूप में सामने आती है, जहाँ ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के बीच संसाधनों और अवसरों में स्पष्ट अंतर देखा जाता है। ऐसे में "“नो बैग डे”" जैसे कार्यक्रम बच्चों को समान रूप से सीखने के अवसर प्रदान करते हुए उनके भीतर छिपी प्रतिभाओं को उभारने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में “नो बैग डे” कार्यक्रम बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने, समूह में कार्य करने, निर्णय लेने तथा दूसरों के प्रति सम्मान और सहानुभूति विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। वहीं चरित्र निर्माण की दृष्टि से यह कार्यक्रम नैतिक मूल्यों, अनुशासन, सहयोग, श्रम की गरिमा, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता तथा सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता को मजबूत करता है। खेलकूद, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से बच्चे व्यवहारिक जीवन के अनुभव प्राप्त करते हैं, जो उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर करते हैं।

उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध-पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. "नो बैग डे" कार्यक्रम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास (आत्मविश्वास, रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता एवं आत्म-अभिव्यक्ति) पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करना।
2. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में "नो बैग डे" की भूमिका का अध्ययन करना, विशेषकर नैतिक मूल्यों, अनुशासन, सहयोग भावना एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के संदर्भ में।
3. विद्यालयी शिक्षा में बच्चों के समग्र एवं सर्वांगीण विकास हेतु "नो बैग डे" कार्यक्रम की भविष्यगत संभावनाओं एवं सुधारात्मक सुझावों को प्रस्तुत करना।

साहित्य समीक्षा

इस शोध की पूर्णता हेतू कुछेक महत्वपूर्ण पुर्व के शोध कार्यों की साहित्य समीक्षा विवरण निम्नानुसार है-

1. जॉन डेवी (1916) ने अपनी पुस्तक "डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन" में बताया है कि चरित्र निर्माण उपदेशों से नहीं, बल्कि अनुभव और व्यवहार से होता है। यह ऐसी पुस्तक है जो शिक्षा को मानवीय, सामाजिक और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करती है। यह स्पष्ट करती है कि व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा को अनुभव-आधारित और गतिविधि-केंद्रित होना चाहिए। इस प्रकार, जॉन डेवी की यह पुस्तक "नो बैग डे" जैसे कार्यक्रमों की वैचारिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि को मजबूत करती है और प्रस्तुत शोध-विषय के लिए अत्यंत उपयोगी साहित्य सिद्ध होती है।
2. कृष्ण कुमार (2010) द्वारा लिखित पुस्तक "शिक्षा कि बदलती भूमिका" "नो बैग डे" जैसे कार्यक्रमों को भारतीय संदर्भ में वैचारिक समर्थन प्रदान करती है और यह सिद्ध करती है कि गतिविधि-आधारित शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। कृष्ण कुमार यह स्पष्ट करते हैं कि जब बच्चों को खेल, संवाद, कला और समूह गतिविधियों से जोड़ा जाता है, तब उनमें आत्मविश्वास, स्वतंत्र सोच और नैतिक मूल्यों का विकास होता है।

3. मारिया मोंटेसरी (1912) की पुस्तक "द मोंटेसरी मेथड" यद्यपि पद्धति मुख्यतः प्रारंभिक शिक्षा पर केंद्रित है, फिर भी इसके सिद्धांत उच्च कक्षाओं में लागू किए जाने योग्य हैं। यह पुस्तक यह सिद्ध करती है कि शिक्षा का वातावरण जितना सहज और अनुभव-आधारित होगा, व्यक्तित्व विकास उतना ही सुदृढ़ होगा।

शोध विधि:

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें राजस्थान के विद्यालयों में लागू "नो बैग डे" कार्यक्रम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण पर पड़ने वाले प्रभावों का व्यवस्थित अध्ययन द्वितीयक आंकडों के आधार पर किया गया है। आंकड़ों का संग्रहण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 NCERT एवं शिक्षा विभाग, राजस्थान की रिपोर्ट्स, शिक्षा एवं बाल विकास से संबंधित पुस्तकों एवं शोध-पत्रों, संबंधित पत्र-पत्रिकाएँ एवं विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोत के माध्यम से किया गया है।

"नो बैग डे" का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव:

"नो बैग डे" एक ऐसा शैक्षिक नवाचार है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को पुस्तकीय बोझ से मुक्त करके उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहित करना है। इस दिन विद्यालयों में पढ़ाई के पारंपरिक तरीके के स्थान पर विभिन्न रचनात्मक, खेलकूद, सांस्कृतिक एवं जीवनोपयोगी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इन गतिविधियों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर गहरा एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

- **आत्मविश्वास में वृद्धि -** "नो बैग डे" के दौरान मंचीय कार्यक्रम, समूह चर्चा, नाटक, भाषण, चित्रकला एवं खेलकूद जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर देती हैं। इससे बच्चों का झिझक और डर कम होता है तथा उनमें आत्मविश्वास का विकास होता है।
- **रचनात्मकता एवं नवाचार का विकास -** इस दिन बच्चों को कला, संगीत, हस्तकला, रंगोली, मॉडल निर्माण आदि गतिविधियों से जोड़ा जाता है। इससे उनकी कल्पनाशक्ति, सृजनात्मक सोच और नवाचार की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है, जो व्यक्तित्व विकास का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है।

- **सामाजिक कौशलों का विकास** - समूह गतिविधियों और सामूहिक खेलों के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग, सहनशीलता, टीम भावना एवं नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। वे दूसरों की बात सुनना, विचार साझा करना और सामूहिक निर्णय लेना सीखते हैं।
- **नेतृत्व क्षमता का विकास** - "नो बैग डे" में विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों की जिम्मेदारी दी जाती है, जैसे समूह का नेतृत्व करना, कार्यक्रम का संचालन करना या आयोजन में सहयोग करना। इससे उनमें नेतृत्व गुण, जिम्मेदारी निभाने की भावना और निर्णय क्षमता विकसित होती है।
- **भावनात्मक विकास एवं मानसिक संतुलन** - पुस्तकीय दबाव से मुक्त वातावरण बच्चों के मानसिक तनाव को कम करता है। खेल, योग, ध्यान और मनोरंजक गतिविधियाँ उनके भावनात्मक विकास को संतुलित करती हैं तथा उनमें सकारात्मक सोच को बढ़ावा देती हैं।
- **अनुशासन एवं आत्मनियंत्रण** - खेलकूद और सामूहिक गतिविधियों के दौरान नियमों का पालन करना विद्यार्थियों को अनुशासन और आत्मनियंत्रण सिखाता है। वे समय का सही उपयोग करना और सीमाओं में रहकर कार्य करना सीखते हैं।
- **संप्रेषण कौशल का विकास** - संवाद, प्रस्तुति और समूह चर्चा के माध्यम से विद्यार्थियों के बोलने, सुनने और विचार व्यक्त करने की क्षमता में सुधार होता है। इससे उनका व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली और आत्मनिर्भर बनता है।
- **स्वतंत्र सोच और निर्णय क्षमता** - "नो बैग डे" बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने और अपनी रुचि के अनुसार गतिविधियाँ चुनने का अवसर देता है। इससे उनकी निर्णय क्षमता और आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है।

"नो बैग डे" का विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण पर प्रभाव :

विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में "नो बैग डे" के प्रभावों को निम्न बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

- **अनुशासन की भावना का विकास** - "नो बैग डे" के अंतर्गत आयोजित खेलकूद, योग, सांस्कृतिक एवं समूह गतिविधियों में विद्यार्थियों को नियमों का पालन करना पड़ता है। इससे उनमें अनुशासन, समयपालन और आत्मनियंत्रण जैसे गुण विकसित होते हैं, जो चरित्र निर्माण का आधार हैं।

- **नैतिक मूल्यों का संवर्धन -** इस दिन नैतिक शिक्षा, प्रेरक कहानियाँ, सामाजिक विषयों पर चर्चा एवं नाट्य प्रस्तुतियाँ आयोजित की जाती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में सत्य, ईमानदारी, सहानुभूति, सहयोग और जिम्मेदारी जैसे नैतिक मूल्य विकसित होते हैं।
- **सहयोग एवं सामूहिक भावना का विकास -** समूह कार्य और सामूहिक खेल विद्यार्थियों को मिल-जुलकर कार्य करना सिखाते हैं। इससे उनमें सहयोग, सहनशीलता, दूसरों की सहायता करने और टीम भावना जैसे गुण विकसित होते हैं, जो अच्छे चरित्र की पहचान माने जाते हैं।
- **सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना -** स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण एवं सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी से विद्यार्थियों में समाज और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न होती है। यह उन्हें जागरूक और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करता है।
- **आत्मनियंत्रण एवं संयम का विकास -** योग, ध्यान और खेल गतिविधियाँ विद्यार्थियों के मानसिक संतुलन को बेहतर बनाती हैं। इससे उनमें क्रोध, तनाव और नकारात्मक भावनाओं पर नियंत्रण रखने की क्षमता विकसित होती है, जो चरित्र की मजबूती को दर्शाती है।
- **सम्मान एवं सहिष्णुता का भाव -** "नो बैग डे" में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम और समूह चर्चाएँ विद्यार्थियों को दूसरों के विचारों, भावनाओं और संस्कृति का सम्मान करना सिखाती हैं। इससे उनमें सहिष्णुता और परस्पर सम्मान की भावना विकसित होती है।
- **जिम्मेदारी और नेतृत्व के गुण -** विभिन्न गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों को जिम्मेदारियाँ दी जाती हैं। इससे उनमें उत्तरदायित्व निभाने, निर्णय लेने और नेतृत्व करने की क्षमता विकसित होती है, जो चरित्र निर्माण के महत्वपूर्ण घटक हैं।

"नो बैग डे" कार्यक्रम के समक्ष चुनौतियां :

"नो बैग डे" कार्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु एक सराहनीय पहल है, परंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कई व्यावहारिक, प्रशासनिक एवं शैक्षिक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। यदि इन चुनौतियों का समय रहते विश्लेषण एवं समाधान न किया जाए, तो यह कार्यक्रम अपने मूल उद्देश्यों से भटककर केवल औपचारिकता बन सकता है। प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण निम्न प्रकार है—

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

| Volume 12, Issue 6, November – December 2025 |

- **पूर्व-योजना एवं स्पष्ट दिशा-निर्देशों का अभाव -** अनेक विद्यालयों में “नो बैग डे” के लिए ठोस कार्ययोजना एवं स्पष्ट दिशानिर्देशों का अभाव देखा जाता है। गतिविधियों का चयन अक्सर अंतिम समय में किया जाता है, जिससे कार्यक्रम की गुणवत्ता एवं उद्देश्यपूर्णता प्रभावित होती है।
- **शिक्षकों के प्रशिक्षण की कमी -** अधिकांश शिक्षक पारंपरिक कक्षा-शिक्षण में प्रशिक्षित होते हैं, जबकि गतिविधि-आधारित शिक्षा के लिए विशेष प्रशिक्षण आवश्यक होता है। प्रशिक्षण के अभाव में शिक्षक “नो बैग डे” को प्रभावी ढंग से संचालित नहीं कर पाते।
- **संसाधनों एवं अधोसंरचना की कमी -** विशेष रूप से ग्रामीण विद्यालयों में खेल सामग्री, कला संसाधन, खुला स्थान एवं अन्य सुविधाओं की कमी एक बड़ी चुनौती है। इससे कार्यक्रम की गतिविधियाँ सीमित रह जाती हैं और सभी विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित नहीं हो पाती।
- **समय प्रबंधन की समस्या -** विद्यालयों में पहले से ही सीमित शैक्षणिक समय उपलब्ध होता है। “नो बैग डे” को पाठ्यक्रम से अलग मानकर देखने पर यह धारणा बनती है कि इससे पढ़ाई बाधित होगी, जिससे शिक्षक एवं अभिभावक दोनों में असंतोष उत्पन्न हो सकता है।
- **केवल औपचारिकता बन जाने का खतरा -** कुछ विद्यालयों में “नो बैग डे” केवल प्रतीकात्मक रूप में मनाया जाता है, जहाँ गतिविधियाँ बिना किसी स्पष्ट उद्देश्य या मूल्यांकन के करवा दी जाती हैं। इससे कार्यक्रम का वास्तविक शैक्षिक एवं नैतिक महत्व कमजोर पड़ जाता है।
- **मूल्यांकन की स्पष्ट प्रणाली का अभाव -** “नो बैग डे” के प्रभावों जैसे व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण का मापन कठिन होता है। उचित मूल्यांकन ढांचे के अभाव में इसके परिणामों का वैज्ञानिक विश्लेषण संभव नहीं हो पाता।
- **अभिभावकों की सीमित सहभागिता एवं जागरूकता -** कुछ अभिभावक इसे ‘पढ़ाई से छुट्टी’ के रूप में देखते हैं। जागरूकता की कमी के कारण वे कार्यक्रम के दीर्घकालिक लाभों को नहीं समझ पाते, जिससे उनका समर्थन सीमित रह जाता है।
- **शहरी–ग्रामीण असमानताएँ -** शहरी विद्यालयों में संसाधनों और विशेषज्ञों की उपलब्धता अधिक होती है, जबकि ग्रामीण विद्यालय इनसे वंचित रहते हैं। इससे “नो बैग डे” के प्रभावों में क्षेत्रीय असमानता उत्पन्न होती है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Refereed Journal|
| Volume 12, Issue 6, November – December 2025 |

- **निरंतरता का अभाव -** यदि "नो बैग डे" केवल कभी-कभार आयोजित किया जाए और नियमित शैक्षणिक प्रक्रिया से न जोड़ा जाए, तो इसके प्रभाव अल्पकालिक रह जाते हैं और व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण में अपेक्षित योगदान नहीं दे पाते।

"नो बैग डे" कार्यक्रम हेतु समाधान एवं सुधारात्मक सुझावों का विश्लेषण:

"नो बैग डे" कार्यक्रम को यदि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण का प्रभावी माध्यम बनाना है, तो इसके समक्ष विद्यमान चुनौतियों का समाधान योजनाबद्ध एवं व्यावहारिक ढंग से किया जाना आवश्यक है। निम्नलिखित समाधान एवं सुधारात्मक सुझाव इस कार्यक्रम की प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं—

- **स्पष्ट नीति एवं पूर्व-योजना का निर्माण -** राज्य शिक्षा विभाग द्वारा "नो बैग डे" के लिए स्पष्ट उद्देश्य, गतिविधियों की रूपरेखा तथा अपेक्षित परिणाम निर्धारित किए जाने चाहिए। विद्यालय स्तर पर वार्षिक कार्ययोजना बनाकर इसे नियमित शैक्षणिक कैलेंडर में सम्मिलित किया जाए, जिससे कार्यक्रम आकस्मिक न रहकर सुव्यवस्थित बने।
- **शिक्षकों का विशेष प्रशिक्षण एवं अभिमुखीकरण** - शिक्षकों के लिए गतिविधि-आधारित शिक्षण, जीवन-कौशल विकास एवं बाल मनोविज्ञान से संबंधित अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। इससे शिक्षक "नो बैग डे" को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि शिक्षण-अधिगम की एक सशक्त प्रक्रिया के रूप में संचालित कर सकेंगे।
- **स्थानीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग** - संसाधनों की कमी को दूर करने हेतु विद्यालय अपने आसपास उपलब्ध स्थानीय संसाधनों जैसे लोक कलाकार, खेल मैदान, सामुदायिक भवन, पुस्तकालय एवं प्राकृतिक परिवेश—का उपयोग कर सकते हैं। इससे कार्यक्रम कम लागत में अधिक प्रभावी बन सकता है।
- **अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता** - अभिभावकों को "नो बैग डे" के उद्देश्यों एवं लाभों से अवगत कराने के लिए बैठकें एवं संवाद कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। सामुदायिक सहभागिता से कार्यक्रम की स्वीकार्यता बढ़ेगी और बच्चों को वास्तविक जीवन से जुड़ने का अवसर मिलेगा।

- **गतिविधियों में विविधता एवं समावेशिता** - "नो बैग डे" की गतिविधियों को विद्यार्थियों की आयु, रुचि और क्षमता के अनुसार विविध एवं समावेशी बनाया जाए। इससे सभी विद्यार्थी चाहे वे शैक्षणिक रूप से कमजोर हों या मजबूत समान रूप से भागीदारी कर सकेंगे।
- **मूल्यांकन एवं प्रलेखन की व्यवस्था** - व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण से संबंधित गुणात्मक संकेतकों जैसे सहभागिता, व्यवहार परिवर्तन, नेतृत्व क्षमता के आधार पर कार्यक्रम का नियमित मूल्यांकन किया जाए। गतिविधियों का प्रलेखन कर अनुभवों को भविष्य की योजना में सम्मिलित किया जाए।
- **शैक्षणिक पाठ्यक्रम से समन्वय** - "नो बैग डे" को पाठ्यक्रम से अलग न रखकर उसे नैतिक शिक्षा, पर्यावरण अध्ययन, खेल एवं कला शिक्षा से जोड़ा जाए। इससे यह कार्यक्रम शैक्षणिक समय की हानि न होकर पाठ्यक्रम का पूरक बन सकेगा।
- **ग्रामीण–शहरी असमानता को कम करने के प्रयास** - ग्रामीण विद्यालयों को अतिरिक्त सहयोग, सामग्री एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाए। डिजिटल संसाधनों एवं मोबाइल प्रशिक्षण इकाइयों के माध्यम से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के बीच की खाई को कम किया जा सकता है।
- **निरंतरता एवं स्थायित्व सुनिश्चित करना** - "नो बैग डे" को एक बार की गतिविधि न बनाकर नियमित अंतराल पर आयोजित किया जाए। निरंतर अभ्यास से इसके सकारात्मक प्रभाव दीर्घकालिक बनेंगे और विद्यार्थियों के आचरण में स्थायी परिवर्तन संभव होगा।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान के विद्यालयों में लागू "नो बैग डे" कार्यक्रम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण के लिए एक सार्थक एवं दूरदर्शी शैक्षिक पहल है। यह कार्यक्रम पारंपरिक, पुस्तकीय एवं परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली के दबाव को कम करते हुए बच्चों को अनुभवात्मक, गतिविधि-आधारित एवं जीवन से जुड़ी सीख प्रदान करता है। अध्ययन से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि "नो बैग डे" के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता, संप्रेषण कौशल, सहयोग भावना, अनुशासन, नैतिक मूल्य तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास संभव होता है। साथ ही, यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के मानसिक तनाव को कम कर उन्हें आनंदपूर्ण एवं सकारात्मक सीखने का वातावरण प्रदान करता है, जो उनके समग्र व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

| Volume 12, Issue 6, November – December 2025 |

है। हालाँकि, विश्लेषण यह भी दर्शाता है कि कार्यक्रम की प्रभावशीलता इसके सुव्यवस्थित नियोजन, प्रशिक्षित शिक्षकों, पर्याप्त संसाधनों एवं नियमित मूल्यांकन पर निर्भर करती है। पूर्व-योजना, प्रशिक्षण एवं संसाधनों के अभाव में यह कार्यक्रम केवल औपचारिकता बनकर रह सकता है। ग्रामीण–शहरी असमानता, अभिभावकों की सीमित जागरूकता तथा निरंतरता की कमी जैसी चुनौतियाँ इसके अपेक्षित परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं। प्रस्तुत समाधान एवं सुधारात्मक सुझाव यह संकेत देते हैं कि यदि "नो बैग डे" को स्पष्ट नीति, स्थानीय संसाधनों के उपयोग, समुदाय की सहभागिता एवं पाठ्यक्रम से समन्वय के साथ लागू किया जाए, तो इसके प्रभाव दीर्घकालिक एवं स्थायी हो सकते हैं। नियमित आयोजन और प्रभावी मूल्यांकन के माध्यम से यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सफल हो सकता है। अतः निष्कर्षतः, "नो बैग डे" कार्यक्रम विद्यालयी शिक्षा को अधिक मानवीय, बाल-केंद्रित एवं व्यावहारिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उचित क्रियान्वयन के साथ यह कार्यक्रम न केवल शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार कर सकता है, बल्कि भावी पीढ़ी को नैतिक, जिम्मेदार एवं संतुलित व्यक्तित्व वाला नागरिक बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

संदर्भ सूची:

1. Dewey, J. (1916). Democracy and education: An introduction to the philosophy of education. New York, NY: Macmillan.
2. Government of Rajasthan. (2022). Guidelines for implementation of no bag day in schools. Jaipur, India: Department of School Education.
3. Kumar, K. (2010). Education, experience and emancipation. New Delhi, India: Orient Blackswan.
4. Kumar, K. (2014). Politics of education in colonial India. New Delhi, India: Routledge India.
5. Montessori, M. (1912). The Montessori method. New York, NY: Frederick A. Stokes Company.
6. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2005). National curriculum framework 2005. New Delhi, India: NCERT.
7. National Education Policy 2020. (2020). Ministry of Education, Government of India. New Delhi, India.
8. Rogers, C. R. (1969). Freedom to learn. Columbus, OH: Charles E. Merrill Publishing Company.

9. UNESCO. (2015). Rethinking education: Towards a global common good? Paris, France: UNESCO Publishing.
10. UNESCO. (2017). Education for sustainable development goals: Learning objectives. Paris, France: UNESCO.
11. Vygotsky, L. S. (1978). Mind in society: The development of higher psychological processes. Cambridge, MA: Harvard University Press.
12. World Health Organization. (2018). Life skills education for children and adolescents in schools. Geneva, Switzerland: WHO.

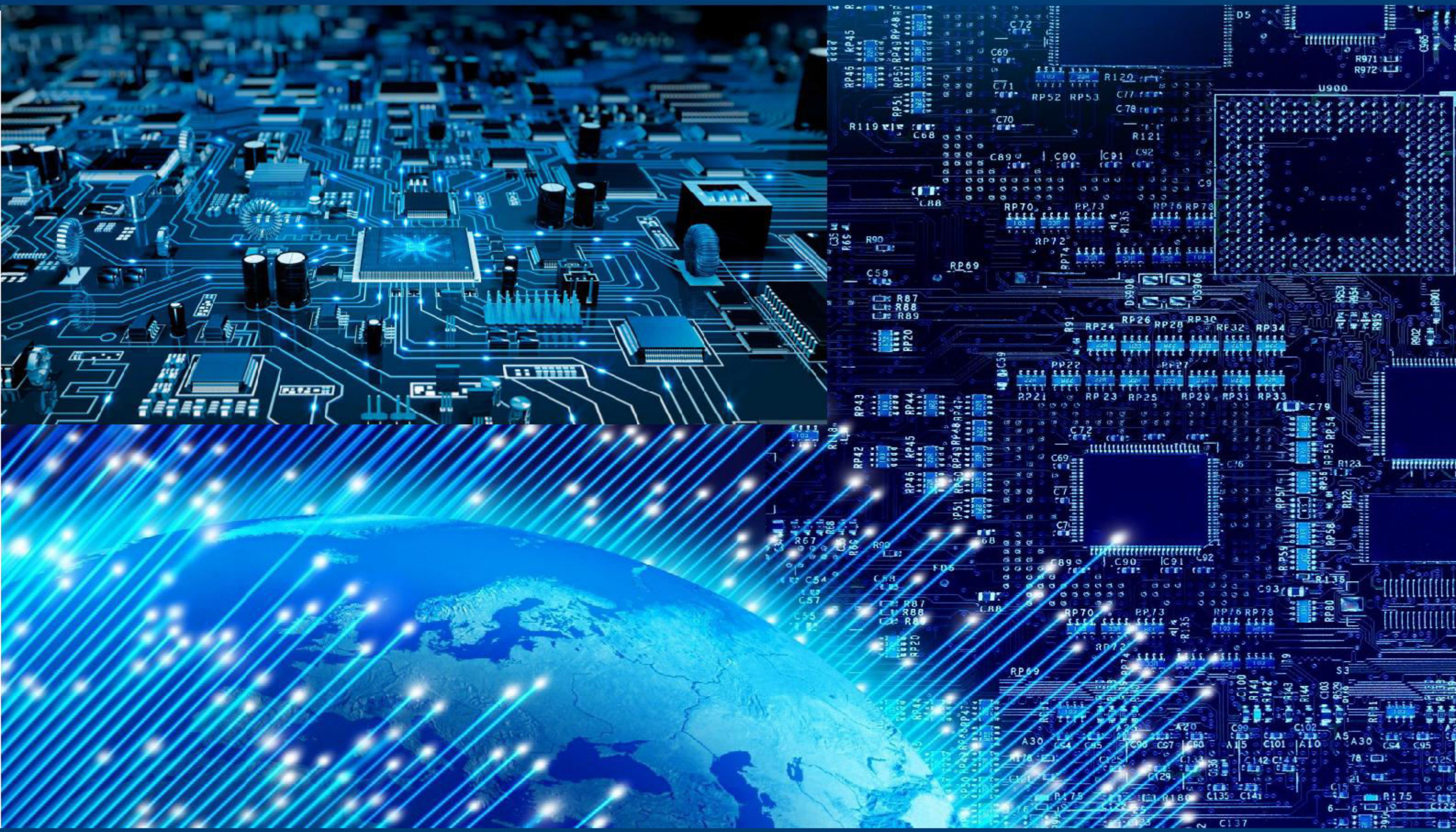

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com